दो-शब्द

"***आस्ट्रेलिया वर्णन सन्क्षिप्तमा***" के कविताओ के पढने से कवि श्री गुजराज गोविंदशरण (कोइराला) के गहरे अंतर्मन के उद्‌गार की अनुभूति हुई । उन्होने वर्णन किया है कि जब वह आस्ट्रेलिया पहुंचकर अपने प्रिय परिजन से मिले तो उसकी सम्पन्नता व खुशहाली से, वह भाव-विभोर हो गये और एक वर्ष का समय ऐसा गुजरा जैसे कि वह कल ही यहाँ आये हो । नेपाल से सात-समुंदर पारकर वह आस्ट्रेलिया आये और यहाँ कि रहन-सहन व रमणीकता को देखकर, इसके महत्वपूर्ण महिमा लिखने की जिज्ञासा उनके मन मे आई । यहाँ पर प्रत्येक दिन सुबह उठकर नित्यक्रिया से निबृत्त होकर पार्क पहुचते है, जहाँ खेलने व व्यायाम के समस्त संसाधनो की उप्लब्धता है । यही पर नेपाली भाई-वंधुओ से भी भेट-मुलाकात हुई और सुबह से शाम तक सतसंग, प्रबचन व शास्त्रादि करने का सौभग्य भी मिला ।

यह आस्ट्रेलिया दक्षिण-पूर्व मे एक महाद्‌वीप है, जहाँ की गाव, शहर, बाजार व बन की सौंदर्यता का वर्णन करना उनके लिये अपरिहार्य हो गया । यहाँ पर कागज के टुकडे, प्लास्टिक, पानी की बोतल व अन्य कूडे की दुर्गंध नही है, जिसके लिये जगह - जगह कूडेदान की व्यवस्था की गई है और यहाँ की प्राकृतिक छटा तो स्वर्ग के समान है । यहाँ की पोलिस व्यवस्था सुदृढ है। पैदल चलने वालो का विशेष ख्याल रखा गया है और जगह-जगह सी0सी0टी0वी0 व पैदल हेतु पैसेज व उनके आने-जाने की प्राथमिकता दी जाती है । नियम तोडने वालो को कठोर दंडात्मक कार्यवाही का भय बना रहता है । यहाँ के लोग दिन-रात निडर होकर अपने-अपने कार्यो पर जाते रहते है ।

कविराज श्री गुजराज जी ने दैनिक उपयोग की वस्तुओ के लिये बडे बाजार, साफ-सफाई, खान-पान की वस्तुओ की स्वच्छ्ता व शुद्‌धता का भी अभूतपूर्ण वर्णन किया है । उन्होने जिक्र किया है कि यह देश चारो तरफ से समुंद्र से घिरा हुआ है और जगह-जगह पर सुंदर बंदरगाह बनाये गए है, जिससे अंतर-राष्ट्रीय व्यापारिक व्यवस्था सुदृढ है । यहाँ पर प्रकाश व्यवस्था बहुत अच्छी व स्वचालित है, जिससे इसको जलाने-बुझाने की अलग से कोई जरूरत नही पडती है । यहाँ पर विभिन्न विचारधारा व धर्म के लोग रह रहे है और हिंदूओ के लिये मंदिर जैसे- राधा-कृष्ण, श्री शिव मंदिर, ऐअप्पा व मोर्गन मंदिर आदि उप्लब्ध है । जहाँ पर समय-समय पर उत्सव मनाये जाते है । नेपाली समाज की भी यहाँ अधिकता है, जिनके द्‌वारा पाराम्परिक व पौराणिक उत्सव बडे धूम-धाम व गाने-बजाने के साथ मनाये जाते है ।

मुझे आने के बाद यह महसूस होता है कि यहाँ पर अपने राष्ट्र नेपाल से भी अधिक इज्जत व पैसा है, जिससे किसी का भी मन यहाँ रम जाता है । नेपाल मे वहाँ के नेता, राष्ट्र की तरक्की मे न लगकर, अपनी झोली भरने मे लगे है । इसलिये वहाँ के इंजीनियर, डाक्टर, पाइलट व शिक्षितवर्ग विदेश मे पलायन कर रहे है - कोई जर्मनी, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि स्थानो पर, वही नेपाल के नेता जनता के पैसे की लूट मे लगे है। परंतु आस्ट्रेलिया आने से यहाँ की छटा देखकर ही इसके वर्णन करने का विचार अंतर्मन मे आया, जिससे लोगो मे राष्ट्रहित की भावना जागृत हो सके।

कविवर श्री गुजराज गोविंद्शरण के छंदो को गहराई दिल को छू जाती है । आशा करता हूँ कि केवल नेपाली समाज ही नही, अन्य देशो से आये हुये लोगो मे भी, यहाँ की व्यवस्था तथा पर्यावरण के प्रति की गई जागरूकता से प्रभावित होकर अपने-अपने राष्ट्र को सुदृढ करने मे योगदान देगे । मै इस पुस्तक की सफलता की कामना के साथ, आशा करता हूँ कविवर भविष्य मे भी अपने विचारो से समाज को इसी प्रकार जोडने का संदेश देते रहेगे।

(डॉ0 भरत राज सिंह),
महानिदेशक**,** स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज**,** लखनऊ व
अध्यक्ष, दि इंस्टीट्यूटशन ऑफ इंजीनियर्स (इन्डिया),
इंजीनियर्स भवन, रिवर बैंक कालोनी, लखनऊ-226018, उत्तर-प्रदेश।
Mob: +919415025825; 9935025825;
Email: brsinghlko@yahoo.com

आबर्न, सिडनी **दि0** 04 जुलाई 2018